स्वातंत्र्याचा अमृत महोत्सव

सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ

(पूर्वीचे पुणे विद्यापीठ)

राष्ट्रीय सेवा योजना

गणेशखिंड, पुणे – ४११ ००७

डॉ. प्रभाकर देसाई
एम्.ए., पीएच् डी.
संचालक

कार्यालय क्र. : ०२०-२५६२२६८८/८९
: ०२०-२५६२२६९०/९१
: ०२०-२५६२२६९२
: ०२०-२५६९७३४१

संदर्भ : रासेयो/२०२२—२३/१०१६ दि. २९/०३/२०२३

प्रति,
मा.प्राचार्य/संचालक,
रासेयो संलग्नित सर्व महाविद्यालये परिसंस्था,
फक्त पुणे शहर,
सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ.

विषय : दिनाक ३० मार्च २०२३ रोजी, लोकमान्य बाळ गंगाधार टिळक यांच्या स्मृतीप्रित्यर्थ स्वराज पर्व कार्यक्रमाकरिता रासेयो स्वयंसेवक पाठविण्याबाबत

महोदय,

मा. क्षेत्रीय संचालक, क्षेत्रीय संचालनालय, युवा व क्रीडा खेल मंत्रालय, भारत सरकार, पुणे यांच्या निर्देशानुसार "आजादी का अमृत महोत्सव" अतंर्गत लोकमान्य बाळ गंगाधार टिळक यांच्या स्मृतीप्रित्यर्थ "स्वराज पर्व" कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात आले आहे. "स्वराज्य हा माझा जन्मसिध्द हक्क आहे आणि तो मी मिळवणारच" या त्यांच्या विधानाने सपूंर्ण भारतातील जनमानसात स्वातंत्र्याची आशा निर्माण झाली. भारताच्या स्वातंत्र्य लढ्यात लोकमान्य बाळ गंगाधार टिळक यांचे खूप मोठे योगदान आहे. या त्यांच्या कार्यबद्दल दि. ३० मार्च २०२३ रोजी, सांय. ०५.०० वाजता बालगंधर्व रंग मंदिर, पुणे येथे स्वराज्याचे प्रणेते लोकमान्य बाळ गंगाधार टिळक यांच्यावर आधारीत "स्वराज पर्व" या नाटयाचे आयोजन करण्यात आले आहे.

तरी सदर कार्यक्रमाकरिता आपल्या महाविद्यालयातील २० रासेयो स्वयंसेवकांना दि. ३० मार्च २०२३ रोजी, सांय. ०५.०० वाजता बालगंधर्व रंग मंदिर, पुणे येथे पाठविण्यात यावेत. कळावे, ही विनंती.

संचालक
राष्ट्रीय सेवा योजना

सोबत : राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर स्मृति न्यास यांचे पत्र

Exempted Under 80-G • रजि. 6/2006 (बी-4)

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' स्मृति न्यास

नीरज कुमार, अध्यक्ष

पत्रांक .....211/2023..... दिनांक .....27/03/2023.....

प्रतिष्ठा में,

आदरणीय श्री डी. कार्थी गेन जी,

क्षेत्रीय निदेशक, एन. एस. एस., मुम्बई।

विषय : आजादी का अमृत महोत्सव के पावन अवसर पर स्वराज्य के प्रणेता लोकमान्य बाल गंगाधर 'तिलक' की स्मृति में दिनांक 30.03.2023 को संध्या 5:00 बजे से बालगंधर्व रंग मंदिर, पुणे में आयोजित हो रहे 'स्वराज पर्व' में एन.एस.एस.पुणे से 800 प्रतिभागी शामिल करने के संबंध में।

मान्यवर,

लोकमान्य बाल गंगधर तिलक को आधुनिक भारत का कौटिल्य कहा जाता है। 100 वर्ष पूर्व 30 दिसम्बर 1916 को लखनऊ की सभा में लोकमान्य तिलक ने उद्घोष किया था- **''स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, और हम इसे लेकर रहेंगे।''** इसी उद्घोष से प्रेरित भारतीय जनमानस स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में ललकार उठा था, जिसके प्रेरक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक थे। उन्होंने भारतमाता के भाल पर ऐसा अनूठा तिलक लगाया, जिसकी दीप्ति दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती ही गई। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम की ऐसी रणभेरी बजायी, जिसकी अनुगूंज समूचे देश में कोने-कोने तक फैल गई थी। लोकमान्य तिलक ने भारतीय युवा मानस की हृत्तंत्री को झनझना कर देशप्रेम का गुंजार कर दिया था, फिर तो इस राग पर लोग अपना सर्वस्व न्योछावर करने को उद्यत हो गए थे। स्वामी श्रद्धानंद के अनुसार ''लोकमान्य तिलक का राजनीतिक कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं में बहुत ऊँचा स्थान है। उन्होंने सबसे पहले राजनीतिक एकता के सिद्धांत का प्रचार किया। वास्तव में किसी भी भारतीय ने अपने देश के लिए इतने कष्ट नहीं सहे, जितने कि तिलक जी ने, वे वस्तुतः एक महान् राष्ट्रीय नेता थे, जिन्होंने भारत को स्वराज्य के निकट पहुँचाया।'' गांधीजी ने कहा था कि ''आने वाली पीढ़ियां उन्हें आधुनिक भारत के जन्मदाता के रूप में याद रखेंगी।'' तिलक जी ने स्वराज्य के लिए समाज को जागृत करने हेतु 'गणपति उत्सव' एवं 'शिवाजी उत्सव' जैसे सामाजिक एवं सांस्कृतिक अभियान चलाये। लोकमान्य तिलक और स्वामी विवेकानंद समकालीन थे और उनमें गहरा आत्मीय संबंध था। भारत के स्वराज्य में लोकमान्य तिलक का श्रेष्ठ योगदान रहा, जिसे युगों-युगों तक भारतवासी स्मरण करेंगे।

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के अग्रदूत लोकमान्य तिलक देश के पहले ऐसे प्रखर पत्रकार थे, जिन्हें पत्रकारिता के कारण तीन बार कारावास भोगना पड़ा था। तिलक ने अपने समाचार पत्रों के माध्यम से जन-जागृति की नयी पहल की थी और उन्हें भारत को दासता से मुक्त करने के लिये जनता के आह्वान का राष्ट्रीय मंच बना दिया था। तिलक जी और उनके इस ग्रन्थ का बिहार के साथ एक विशेष सम्बंध भी रहा। 30 अप्रैल 1908 को जब खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी ने अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध बिहार के मुजफ्फरपुर में बम विस्फोट किया, तो लोकमान्य ने अपने केसरी तथा मराठा के मई एवं जून के अंकों में इस कार्रवाई के समर्थन में अनेक सम्पादकीय लिखे, जिन्हें अंग्रेज सरकार ने राजद्रोहात्मक ठहराया और उन्हें बर्मा के माण्डले

जेल में छः वर्ष बिताने की सजा सुनायी गयी। लोकमान्य ने जेल की यातनामय परिस्थतियों में भी 'श्रीमद्भगवद्गीतारहस्य अथवा कर्मयोगशास्त्र' जैसे एक ऐसे बृहद, ऐतिहासिक और विश्व-मानवता के लिये अत्यन्त कल्याणकारी ग्रन्थ की रचना कर दी, जिसके बारे में सोचना भी आज असंभव लगता है। इस दिव्य ग्रन्थ का प्रकाशन 1915 में किया गया और हिंदी अनुवाद महान साहित्यकार एवं पत्रकार श्री माधवराव सप्रे द्वारा 1916 में किया गया था। नेताजी सुभाष ने श्री केलकर को लिखे अपने पत्र में इस प्रसंग पर बहुत ही मार्मिक और सारगर्भित उद्गार व्यक्त किये हैं, 'केवल लोकमान्य जैसा दार्शनिक ही, जिसे अदम्य इच्छाशक्ति का वरदान मिला था, उस बन्दी जीवन के शक्ति हननकारी प्रभावों से बच सकता था, उस यन्त्रणा और दासता के बीच मानसिक सन्तुलन बना रख सकता था और 'गीता भाष्य' जैसे विशाल एवं युग-निर्माणकारी ग्रन्थ का प्रणयन कर सकता था।' इस ग्रन्थ ने स्वाधीनता आन्दोलन के दौर से लेकर आज तक करोड़ों देशवासियों का पथ-प्रदर्शन किया है और आज भी कर रहा है। पश्चिमी भौतिकतावादी कुविकास की अन्धी दौड़ में शामिल हमारा देश आज जिस सांस्कृतिक, नैतिक, वैचारिक एवं आध्यात्मिक संकट के दौर से गुजर रहा है, उससे बाहर निकलने में लोकमान्य तिलक रचित 'श्रीमद्भगवद्गीतारहस्य अथवा कर्मयोगशास्त्र' की भूमिका और प्रासंगिकता एक बार फिर से बढ़ गयी है।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' स्मृति न्यास महर्षि दयानंद सरस्वती, लोकमान्य तिलक, स्वामी विवेकानंद, रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गांधी, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, मुंशी प्रेमचन्द एवं राष्ट्रकवि दिनकर के विचारों को अपना लक्ष्य बनाकर सांस्कृतिक भारत के निर्माण हेतु इस अभियान को जन-जन तक पहुँचा रहा है। इसी सिलसिले में **आजादी का अमृत महोत्सव में स्वराज्य के प्रणेता लोकमान्य बाल गंगाधर 'तिलक'** की पावन कर्मभूमि पुणे, महाराष्ट्र में प्रख्यात रंगकर्मी श्री मुजीब खान के निर्देशन में **''लोकमान्य तिलक''** का नाट्य मंचन किया जायेगा।

अतः आपसे आग्रह है कि आज़ादी का अमृत महोत्सव के पावन अवसर पर स्वराज्य के प्रणेता लोकमान्य बाल गंगाधर 'तिलक' की स्मृति में दिनांक 30.03.2023 को संध्या 5:00 बजे से बालगंधर्व रंग मंदिर, पुणे में आयोजित होने जा रहे 'स्वराज्य पर्व' में एन.एस.एस.,पुणे से 800 प्रतिभागी शामिल कर सांस्कृतिक भारत निर्माण अभियान में सहयोग करने की कृपा करें।

विदित हो कि लोकमान्य बाल गंगाधर 'तिलक' की पावन कर्मभूमि पुणे रही है, और यहीं से स्वाधीनता की लड़ाई आजीवन लड़ते रहे ।

विशेष : आपसे निवेदन है कि इस महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम में आप अवश्य आने का कष्ट करें, जिससे कार्यक्रम गरिमामयी हो सके।

कृपया, अपनी स्वीकृति से अवगत करायें।

सादर,

भवदीय

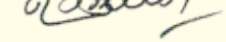

नीरज कुमार
मो. 9650334142